No. ५५०३ – घ

Title सुदामा जी की बाराखरी

Author

Extent १४ Age

Subject काव्यम् . संपूर्णम्

नं० ५५०३-घ

रामाज्ञीका

गवरी

पत्राणि ~~१६~~ १४
(संपूर्णमे)

~~१०१२~~

128

नं० ५५०३-घ

सुदामा जी की बारारवरी

(हिन्दी काव्यम्)

पत्राणि १८ (संपूर्णम्)

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।। ॐ कंकांकम
लनयननारायणस्वामी ।। व
सैहारकांत्रनरजामी ।। ॐ कं
कांकलिजगनामत्रधारा ।।
प्रभसांमेरोभवउनरोपारा ।।

वा १

साधुसंगतिमिलिहरिगुणगीजै
जीवनजनमसफलकरलीजै ॥
विनावीजोसकलजहाना ॥
जाकोगावैवेदपुराना ॥ तिसमे
नामहरिकोलीजै ॥ चरनकम

लकोध्यानधरीजै ॥ १ ॥ गागाग्रन
गोबिंदकोगावै ॥ मायाजाल
भूलीजतिजावै ॥ धनजोबन·
तनरंगापतंगा ॥ छिनमैछारहै
तसबसंगा ॥ २ ॥ चव्याच्चटयट।

वा· १

2

मे लोभाई ॥ जलथलमेप्रभुरहे
समाई ॥ ऊचनीचज्ञानकरिदेखो
एकहिब्रह्मसकलमेलेखो ॥ ४
मनाहि· रामखोजकरिदेखो
हजाग्रारनाहिकोईलीखो ॥ सम

दीपक्षेत्र खलिंग ॥ नाम दिक्षा ई
होत न वांविड ॥ ५ ॥ वचा बिन
तिह चैक रि राके ॥ मिथ्या वा
द कूट मांते भाके ॥ समय ग्राह
न पहोत प्रमाना ॥ कूट वचन

सोईपापसमाना ॥६॥ इच्छाछ
लबलनजोविकारा ॥ तिरपे
नामजपोपकुसारा ॥ कामक्रो
धकोनजोप्रसंगा ॥ रहिपस·
दासेननकेसंगा ॥७॥ जजाज

पोजगातपोतहैसा॥ जाकोध्यावे
सेतेतिसा॥ निसिवासररहो·
लोलाई॥ हरिपदचरनकमल
भवरोहि॥ ठ॥ कथाकेसनकौ·
जेभाई॥ सिरपरकालरहोम

बा॰
४

डाई॥चेननहोयहरिमलेर॰
हिये॥कालद्रासकाहूकेपस॰
हिये॥ए॥ननानिमखनिमख
रोहपनोहारे॥चितनेख्या॰
नुपलकनोनिटारो॥ब्राबोज

मरहोलोलाई ॥ चितनचरतनमे
रहोसमाई ॥ ११ ॥ टटाटोटोजग
नकोनाता ॥ नहिकोईमातपि
तासुतभ्राता ॥ हरिसोंहोहुवन
हिकोईअपना ॥ जगमोहार

वा
५
5

नैनकोरूपपना ॥११॥ दरशठाकुर
परमसनेही ॥ जिनपहदोझी
संदरदेही ॥ नरदेहोकेलाहा
लीजे ॥ प्रेममगनहोयरहोर
मपीजे ॥१२॥ इअआमाअलचि

नजिनिकोरो॥ लिदेखानखति
कोधरो॥ आनदेवकाहूकेध्या
वो॥ हदाविश्वासरामगुनगा
वो॥ ३॥ द्वादशदिनकोकहा
जैयमाहिं॥ रोमरोमप्रसबहोस

बा॰
६
6

माई। पिंडब्रालोडब्रोभरमा
सदातिकटहैविनाहिंनहरा॥४
णाणानेहहरीसोलावो॥प्रेम
सहितप्रभुकेगुनगावो॥ड
विंयाभ्रमतजोमनभ्राता॥

संतजननकोकीजेमाना ॥ ५

नतातेहोइफलकमाई ॥ नर

देहदुर्लभरतनकोपाई ॥ हरिभ

जगार्भवासतेछूटो ॥ रामनाम

प्रेमसाधनलूटो ॥ ६ ॥ पथापथ्या

बा· ७

मेजीवनभाई।हरिबिनजन
मक्षकारणजाई॥चैननहोय
हरिनामउचारो।ननकोवि
वियानापतिवारो॥१७॥दद्दा
देखतहिकोजगमोहारा।

मायाजालबंधेसंसारा॥ बं
धनसेजोछुटेचाहिये॥ स
रनजायसंतनकेरहिये॥ ८
यथायतनोयरहिदेयर
माई॥ संतनकेपगसदास

वा
८
8

ह्वै। सदा समीप निमाव नहि
टरही॥ संतजननकि रत्नाक
रहै॥४॥ ननानाम निरंतरली
जै। संतजननकि सेवाकिजै
साचि भक्ति भगवान को भावे

प्रेमसहितप्रभुकेगुनगावो॥१

पपापपरैपरैसबजनमगामाये

गुनावारप्रभुकेनहिगायो॥

मायाभरमभूलिरह्योग्रंपा॥जे

नमगामायोकालिकालिपंथा॥२

वा
२

9

फफाफिरिफिरिपिरोमोहकी
फंदा॥ अवङ्गतचेतोम्हरावित्रं
या॥ गुरुचरननकियपरमतत्रा
सा॥ हरिभजुकटैकालकित्रा
सा॥ २२॥ वबावैलोअमृतवाती

सनेहप्रीतिप्रेमरससानो। हरि-
ह्रीराखदेषीताको॥ कुडुकव
चनसोंवितेजानिभाखे। ५२। भ
भाषलोमननसमुझावो। जा-
सोभवजलफेरिनआवो। प

वा
१०
20

सिभकिकेोमनमेरा॥ जामेज
रामरतनहोयनहिनेरा॥ २४॥ म
मामोहजालभवसागरभा·
री॥ धीमरकालमीनसंसारी
जालालियेजमफिरतत्रेह

रा ह्रीविश्रवनपदेनदोरा। २५
यपायेहृश्रवसरनोंहवांवा
रा। नानेश्रंनिश्रनिकरनश्रका
रा॥ मनवामिचनमचनरमजा
जाना। विवरसक्षाडिभजोभः

वा गवाना ॥ १६ ॥ रगारटनहतनहूरि
२१ मोलाको ॥ हीराजननमजातिवा
हगमाको ॥ पमोहिराजोनामजे
है ॥ आसरऊंकाफिरिपछुनेहै ॥ २१
ललालालअमोलकमनहै

रता॥ ननमंडारजननकीधर
ना॥ प्रभुलालगृहदेवलखोया
तस्मालोभमसवहूरागमायेया॥ २८
ववाउनगृहकिवलीस्त्रीजै
ये॥ जोनसेवक्लश्रोमावलैये॥

वा
१२

12

वारवारनमाउमाप्या।उनपद
कमलचरनमनराता॥१५॥स
सागनगुरुकेकहाकरोव-
उई॥माहिमाग्रवितकछुव
रतिनजाई॥चितलागोसतन

गुरुकेचरना॥रमनापककुः
हालागीवरना॥३॥घघाघेंचि
लियागुरुअपतिश्रोरा॥माया
फंदपलकमेतोरा॥तिसेय
मयोसर्वरमस्यागी॥जवसे०

वा·
१२

13

हृवननताविनलागी ॥ ध ॥ शा·
शोचविचारमेमोजियजवसे
दीपकज्ञानदियोगुरुजवसे ॥
नासोतिमरजवभयोप्रकासा
मानोरविकिरनकरभासा ॥ १२

हहाहरिगयोपापपराछितपा

प॥श्रीगुरुचरनकमलप्रताप

जैसेध्रुवचंद्रदिसेचेरा॥प्रगटे

भानजबभयोउजेरा॥५॥लल

लैनेकोहहहरिकोनाम॥दैनै

वा॰
१४
15

कोऽग्रमदानसमाना ॥ धरेनेको
देसमकोध्याना ॥ सेव नकोऽग्र
हवरनसमाना ॥ ३५ ॥ कुछ्याबु
टेजेगिविवंधनसेचाद्दीय ।
सनउहवरनसमनेहयरहि॰

ये ॥ नाममभुररमपियेमज्ञाना

गर्भवासननहिहेतपयाना ॥ २४

वागाविदीज्ञानग्रनगावो ॥ सव

संतनकोसिमनवावो ॥ दिनप·

तितदासमदामा ॥ नमस्कारग

वा॰ देवप्रतामा॥४८॥इतिश्रीसदा
१४ माजीकीहानवारावरीसंपूर्ण
मा॥सुभम॥

15

